

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजीकृत) चेन्नई

ज्योतिष विशारद परीक्षा : दिसम्बर 2011

समय : 3 घन्टे

प्रश्न पत्र-V

कुल अंक : 50

नोट :- कुल पाँच प्रश्नों का उत्तर दें। हर एक भाग में से अनिवार्य प्रश्नों के अलावा कम से कम एक प्रश्न का उत्तर देते हुए शेष तीन प्रश्नों का उत्तर दें। प्रश्न 1 और 6 अनिवार्य हैं। सब प्रश्नों का अंक समान है। भाग एक का उत्तर जैमिनीय आधार पर एवं भाग दो पराशरी सिद्धांत के अनुसार उत्तर देना है।

भाग-I (जैमिनी ज्योतिष)

1. कारकांश से द्वितीय व चतुर्थ भाव में स्थित के विभिन्न ग्रहों के फलों का विवरण दें।
2. अर्गला कुण्डली बनाकर सभी बारह भावों पद लग्न ज्ञात करें।
लग्न-वृषभ 20:11, सूर्य-कर्क 14:08, चन्द्र-कन्या 21:26, मंगल-मिथुन 11:56, बुध-कर्क 18:32, गुरु(व)-मकर 02:46, शुक्र-सिंह 11:54, शनि-सिंह 12:17, राहु-मीन 26:16, केतु-कन्या 26:16
जन्म 31.7.1949, 1:12 प्रातः, कोलकता, दशाः शेष-चन्द्रमा,
1व 5मा 5दि, पुरुष जातक
3. प्रश्न 2 में दिए जन्मांग के लिए चर दशा ज्ञात करें व वर्ष 2011 में घटित कोई दो मुख्य घटनाओं के बार में बताएं।
4. निम्न पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें :
 - i) ज्ञाति कारक की भूमिका
 - ii) ग्रह के बल की गणना की विधि
 - iii) उपपद व वैवाहिक जीवन
 - iv) आयुर्दय में कक्षा हास
5. निम्न सत्य है या असत्य :
 - i) आत्मकारक से केन्द्रस्थ ग्रह अधिकतम बली होते हैं।
 - ii) भातृकारक से इष्ट देव को ज्ञात करते हैं।
 - iii) उपपद से द्वितीयस्थ उच्च ग्रह दर्शाता है कि पत्नी किसी कुलीन परिवार से होगी।
 - iv) आरुढ़ लग्न से पंचम में सूर्य से दृष्ट राहु नेत्रों पर खतरा दर्शाता है।
 - v) यदि चन्द्र व शुक्र परस्पर दृष्ट हो तो जातक के पास अनेक वाहन होते हैं।
 - vi) यदि आत्मकारक धनु नवांश में होतो जातक के जीवन में अनेक दुर्घटनाएं होती है।
 - vii) बृहस्पति दादी व दादी का कारक हैं।
 - viii) एक से अधिक अशुभ ग्रहों द्वारा तृतीय भाव में अर्गल बनाए तो कोई परिहार नहीं है।
 - ix) यदि मंगल व केतु वृश्चिक राशि में हो तभी वृश्चिक की 12 वर्ष की चर दशा होती है।
 - x) चर राशि की 7 वर्ष की स्थिर दशा होती है।

भाग-II (विवाह एवं मेलापक)

6. विवाह के समय निर्धारण की विधि की विस्तार से चर्चा करें व निम्न जातक के विवाह के समय का निर्धारण करें :-
जन्म-18.5.1983, 16:10 बजे, दिल्ली, पुरुष जातक
दशा शेष - बुध-15 व 2 मा 20 दि

लग्न-कन्या 26:22, सूर्य-वृषभ 3:19, चन्द्र-कर्क 18:04, मंगल-वृषभ 7:29
बुध(व)-मेष 24:33, बृहस्पति(व)-वृश्चिक 13:38, शुक्र-मिथुन 16:23,
शनि(व)-तुला 5:35, राहु-मिथुन 1:44, केतु-धनु 1:44

7. (क) विवाह के विलम्ब के पाँच योग बताएं।
(ख) जल्द विवाह के पाँच योग बताएं।
8. (क) जन्म नक्षत्र मेलापक के अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के लिए अन्य महत्वपूर्ण तथ्य क्या हैं?
(ख) जन्म कुण्डली मिलान के लिए नीचे दिये तथ्यों के अपवादों का वर्णन करें।
i) यदि पुरुष तथा महिला, दोनों जातकों की दशा समान हो?
ii) पुरुष जातक की कुण्डली में मंगल दोष पाये जाने पर?
iii) यदि जन्म राशि में 6:8 संबंध हो?
iv) यदि महिला जातक के नक्षत्र से पुरुष जातक का नक्षत्र चौथे हो?
9. नीचे दिए महिला जातक का वैवाहिक जीवन के बारे में कारण बताते हुए वर्णन करें।

जन्म: 20.8.1983, समय 21:20 बजे, स्थान : दिल्ली

महिला, दशा शेष: रवि 3 वर्ष 12 माह 1 दिन

लग्न-मीन 24:56, सूर्य-सिंह 3:26, चन्द्र-मकर 1:8, मंगल-कर्क 10:52;
बुध-कन्या 0:45, बृहस्पति-वृश्चिक 8:12, शुक्र(व)-सिंह 10:33, शनि-तुला
6:5, राहु-वृषभ 29:35, केतु-वृश्चिक 29:35

10. निम्नलिखित में से किसी एक का वर्णन करें।

(क) सातों ग्रहों में से किसी एक के सप्तमेश का प्रभाव
अथवा

(ख) द्वादश भावों में सप्तमेश के पड़ने का प्रभाव